अतीत की ओर...

वर्ष : 01, अंक : 05, अक्टूबर – नवंबर 2023

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

नहीं पुछती मंजिले मुझ को तेरे रूठ जाने के बाद,
भटका हूँ बहुत तेरे शहर में तेरा साथ छुट जाने के बाद,,,
- अलबेला

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

सरोज कु. मिश्रा (अनजाना)

भोजपुरी के भारतेन्दु... महेंद्र मिश्र

अतीत के झरोखा से जब भी भोजपुरी साहित्य के देखल जायी त ओमे एगो बहुत सुंदर फुलवारी नज़र आई जवना में भोजपुरी विधा के अनेक तरह के फूल खिलल मिली। एहि फुलवारी में एगो अइसन फूल खिलल मिली जवना में अनेकों प्रकार के सुगंध रूपी प्रतिभा खुद में समाहित नज़र आई। बात आज भोजपुरी के उ महान कलाकार के होई जेकरा गीत में भोजपुरी बयार ए प्रकार रहे कि तवायफ़ के कोठा से लेके मंदिर के द्वार तक एक सम्मान आदर आ मान मिलल। भोजपुरी साहित्यन में

पूर्बी के जन्म दाता जऊन पढ़िया पूर्बी के नाम से जानल जाला, साथ में उहाँ में साज, आवाज़ आ बाज़ के त्रिवेणी रहे। आवाज़ में उ जादू रहे की जब बाबा गायीं त पत्थर के पिघला देवे के क्षमता रहे। अइसन लागे कि उहाँ के संगीत सुने खातिर, आवाज़ सुने खातिर हवा थम जाए, नदी आपन धारा के समेट लेवे।

भोजपुरी के अइसन हस्ती जे लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत आ एकरा अलावा लौकिक साहित्य में भी आपन कलम से चमत्कार देखवनी। उहाँ के अपना रचना में बिरहन के पीड़ा, चाहे भक्त के याद में बिरहन होखे... के बखूबी स्थान देहनी। इहा तक कि भोजपुरी में संस्कार गीत के रचना भी बाबा के द्वारा भइल।

महेंद्र मिसिर द्वारा लिखल गइल पांडुलिपि

पद्मश्री शारदा सिन्हा की आवाज़ में "पटना से बाइयदा बोलाईद नजरा गईनी गुइयां....", "पनिया के जहाज से पलटनीय बनी अईहह हो..." जईसन तमाम गीत के रचयिता, भोजपुरी गायक देवी की आवाज़ में "अंगूरी मे डसले बिया नगीनीया रे ए सखी साईया के जगा दे...", एकरा अलावे लौंडा नाच में "श्याम मथुरा परइले हो, दरदिया दे के ना...", " पिलाह राम नाम राशगोई", ई गीत के भी उहाँ के द्वारा लय बध कइल गइल गीत रहें। भोजपुरी के सेक्सपियर,परमशिष्य भिखारी ठाकुर जी बाबा के सागीर्ध रहनी। साल के चार महिना बरसात के समय में उन्हें के दरवाजा पर भिखारी ठाकुर के समय बितत रहें। देश - विदेश के अलग अलग कोना मे रहत गिरमिटिया मजदूर लोग उहाँ के गीत हर जगह पहुचईलख। **भोजपुरी के भारतेन्दु** महान कलाकार स्वतंत्रता सेनानी, गरीब के मसीहा **महेंद्र मिश्र** के जन्म सारण जिला के कराही मिश्रवलिया गाँव में भइल रहें। कोलकाता, मुजफ्फरपुर, बनारस, छपरा, बनारस के नृत्यांगना, गायिका बाबा के शिष्य रहे लोग। ई क्रम में सबसे मशहूर 'ढेला बाई' के नाम आवेला जहाँ अंतिम कार्यक्रम उहाँ के ढेला बाई के घर पर भइल, आ ओहिजा ढेला बाई के घर के सामने शिव मंदिर में पूजा करत बाबा के मृत्यु हो गइल। संगीत से मशहूर भइला के बाद महेंद्र मिश्र जी कलकत्ता गईनी, ओजा उहाँ के संपर्क में कई स्वतंत्रता सेनानी लोग आइल, ओहिजा से उहा के हाथ में नोट छापे वाला मशीन प्राप्त भइल। मशीन से नोट छाप छाप के उहाँ के स्वतंत्रता सेनानी लोग के मदद करे लगनी आ ब्रिटिश सरकार के अर्थव्यवस्था के हिला के रख देहनी।

भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की मदद के लिए महेंद्र मिश्र द्वारा छापे गए नकली नोट

ब्रिटिश सरकार के जाली नोट छपाई के कही ना कही से भनक मिलल। जेकरा बाद ब्रिटिश सरकार आपन एगो ख़ुफ़िया जासूस गोपी चंद के भेजलख आ सच्चाई के पता लगावे के काम सौपलख। महेंद्र बाबा के नोट छपाई के जानकारी गोपी चंद के मिलल, जेकरा बाद ब्रिटिश सरकार महेंद्र बाबा के गिरफ्तार कर लेलख। ए सन्दर्भ के ज़िक्र बाबा के रचित गीत "पाकल पाकल पनवा खियवले गोपी चनवा..." में मिलेला। गोपी चंद भी गीत के द्वारा ही बाबा के जवाब देहलन "रोपीया के छापी छापी गिनीय भाजइलह ए महेंद्र बाबा ब्रिटिश के काईलह हल्का..."। बाबा के जमानत खातिर तवायफ़ लोग शरीर के आपन सारा गहना उतार के रोपया से तौल देवे के बात कहल लोग।

महेंद्र बाबा के पहिले 30 साल के सजा ओकरा बाद 10 साल के सजा भइल। सजा भईला के बाद उहा के बक्सर जेल भेजल गइल। बक्सर जेल में उहाँ के अच्छा व्यवहार से ओजा के जेलर प्रभावित भइल। रात में एक बेरा पूर्वी गावत उहाँ के आवाज़ जब जेलर के कान में गइल त जेलर भी बाबा के गीत सुने लागल। "आधी आधी रतिया के ...." ओकरा बाद जेलर के अनुरोध पर बाबा कुछ और गीत सुनइनी। जेल में रहते बाबा अपूर्व रामायण के रचना कईनी, जाऊन एगो महाकाव्य बा। सात कांड के रामयण के अंदर संगीत के सब विद्या समाहित बा। अफसोस के बात बा की हमनी के बीच में ओह रामायण के प्रचार ना भइल।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1955 : कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) का उद्घाटन किया गया।

1907 : ओकलाहोमा को अमेरिका के 46वें राज्य के रुप में मान्यता मिली।

नई सुबह का इंतजार है...

रितेश आदर्श

अंक चार से आगे...

अचानक फावड़ा और टोकरी झकझोर कर दोनों को उठाते हैं। बल्ला और गेंद सपने की सीमाओं को नहीं लांघ सके। वह मोनू और सुरेश के बचपन की तरह कैद हैं। गांव अपार्टमेंट के वॉचमैन की तरह होता है, जो हर किसी की खबर रखता है। उस गांव के लोग अपार्टमेंट की तरह एक दूसरे से मतलब ना भी रखें तब भी गांव उन सबकी खबर रखता है। मोनू और सुरेश अपार्टमेंट के आमने सामने वाले दो कमरे हो चुके थे। वॉचमैन से मिलना एक दूसरे से मिलने से कहीं ज्यादा आसान था। कई सालों से यही होता रहा कि एक दोस्त छठ में गांव पहुंचता दूसरा होली के मौके पर!

बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म पर लग चुकी है। कुली पास आकर बोलता है, "मदद चाही त बोला! दू पइसा कम दे दिह।" सुरेश पहले खुद को, फिर अपने परिवार को निहारता है। ओह! शायद गमछा देख कर बिहारी समझ लिया होगा, नहीं शायद बच्चों को भोजपुरी बोलते सुन लिया होगा! फेसबुक पोस्ट हो या प्लेटफॉर्म, रियल वर्ल्ड और वर्चुअल वर्ल्ड दोनों ने बिना पूछे उसे बिहारी समझा है और समझती रहेगी ताउम्र! इससे अच्छा अवधी सीख लेता! देवरिया, गोरखपुर और पूरा भोजपुरिया समाज इस समस्या से त्रस्त है। टीटी लपक कर उसकी तरफ बढ़ता है।

टीटी की आंखों में लकड़बग्घे जैसी जिद और चमक देख सुरेश कांप उठता है। जेब से टिकट कांपते हाथों से निकाल टीटी को पकड़ता है। टीटी पूछता है, 'बिहार से हो?' सुरेश कहता है, 'नहीं बड़ा बाबू, यूपी से है।' टीटी हंसते हुए कहता है, 'तभी न टिकट कटाया है तुम, देखने से बिहारी लग रहे थे। चलो जाओ! आगे बढ़ो!'

सुरेश कहना चाहता था, "गोरखपुर से बानी भईया, बिहार से नईखी आवत" पर झेप जाता है और आगे बढ़ जाता है। बिहार से आने वाली ट्रेन जिसमे बैठे लोगों की रगो में भी लाल खून दौड़ रहा था, अचानक वह सब लोग पराए हो गए। बिहार और यूपी के बीच की सबसे मजबूत डोर भोजपुरी अचानक उसे अपनी कमजोरी लगने लगी। पांच उपभाषा और 17 बोलियों की विराट थाती की मालकिन हिंदी को चंद मूर्ख खत्म नहीं कर सकते।

सुरेश ने हिंदी के इस पचड़े से खुद को बाहर रखने में ही अपनी भलाई देखी। पीछे मुड़कर कहा, जल्दी जल्दी चला लोग, घर पहुंच के फेर स्कूल भी जाए के होई! सीमेंट में सने जूते देखने के सिवा उसे अब और कुछ देखने की फुरसत नहीं थी। बच्चों को पढ़ाने के सिवा दूसरा कोई उद्देश्य नहीं था।

रेखाचित्र : भाग 5

आर्टिस्ट का नाम :
रश्मि तिवारी (न्यू हाउसिंग कॉलोनी, छपरा)

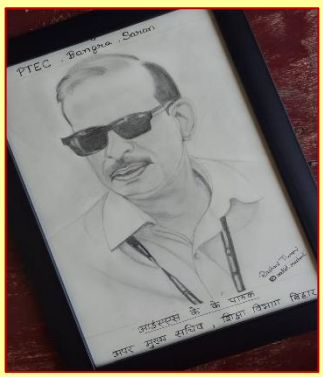

आर्टिस्ट का नाम :
पंकज कुमार (प्रभुनाथ नगर)

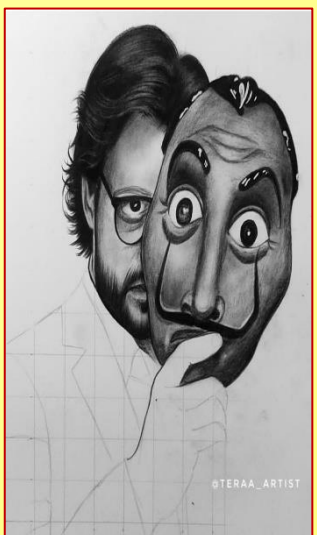

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1918 : पोलैंड ने रूस से अपनी स्वतंत्रता का ऐलान किया।

1799 : नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस के तानाशाह बने।

गाँव – तब, अब और आगे...

प्रेम शंकर

अंक चार से आगे...

साथ ही हम ये भी देखते हैं की समय के साथ हमारे गाँव में राजनीतिक पार्टियों ने अपनी पकड़ मजबूत की है।

एक केंद्रीकृत प्रक्रिया फिर से जन्म ले रही है, जिससे समाज में 'स्वशासन' कि जो सोच थी उसमे कुछ स्तर पर गिरावट नज़र आती है। हालांकि, बदलती राजनीति व आर्थिक परिस्थितियां धीरे - धीरे ही सही लेकिन गाँव के बीच के अलगाव को खत्म कर रहीं हैं। बेहतर होते संचार के माध्यम और परिवहन व्यवस्था ने गाँव को आत्मनिर्भर बनने कि दिशा में कदम बढ़ाया है।

सर चालर्स मेटकालफ़े ने भारतीय गाँव पर कहा था की "ऐसा प्रतीत होता है की वे वहाँ टिकते हैं जहां कुछ भी नहीं टिकता", हमारे गाँव टीके रहेंगे।

शुभम कुमार

प्रदूषण की चादर ओढे छपरा

छपरा मे बढ़ती प्रदूषण की समस्या ने सभी को चिंता मे डाल रखा है। प्रदूषण की समस्या ने इस छोटे से शहर को अपनी चंगुल में ले रखा है। शहर में प्रदूषण जैसी बड़ी समस्या को नज़रअंदाज़ करना कहीं से भी सही नहीं है। शहर में बढ़ती प्रदूषण की समस्या का सबसे बड़ा कारण अनियंत्रित निर्माण और निर्माणाधीन गतिविधियां हैं, जिनपे प्रशासन का कोई लगाम नहीं है। दूसरा बड़ा कारण शहर में पेड़ों की कमी है। शहर में हरियाली की कमी से सड़कों पर धूल मिट्टी ज्यादा बढ़ी है। तीसरी सबसे बड़ी कमी शहर में नालियों का सफाई ना होना, कचड़े की वजह से नालियों में जाम की समस्या बनी रहती है। इस वजह से शहर में पानी का रिसाओ सही ढंग से नहीं होता और अलग अलग बीमारियां होने का खतरा बना रहता है। शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर फेके जाते कचड़े, शहर के लिए परेशानी का सबब बने हुए हैं।

शायद यही कारण है की पूरे देश में प्रदूषण की सूची में छपरा दूसरे स्थान पर है। इसी उपलब्धि को लेकर हम आगे भी बढ़ रहे हैं, ना हमारा सूची मे स्थान बदला, ना हमारी सोच बदल रही है, ना समाज खुद को बदलना चाहता है, ये सोचनीय विषय है।

भोजपुरी विशेष

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

रात ढलत रही दिल मचलत रही
जब व्याकुल नयन पेरा जोहत रही

चांद छुप जाइ जाके बदरिया में
जान चुपके से अइह अटरिया पे

अंतरा दु गो दिल के अलावा केहू ना रही
कुछ तोहरी सुनी कुछ आपन कही

बाकी बात हो जाई नजरिया से
जान चुपके से अइह अटरिया पे

अंतरा प्रीत पर पहरा लगावेला जमाना
तरपेला आशिक पीटाला दीवाना

तोहके देखी नाही केहु अंधेरिया में
जान चुपके से अइह अटरिया पे

- अनजाना

भोजपुरी गीत : हमार सजनी

तू पिरितिया के पावन पुकार सजनी
पार करिह जिनिगिया हमार सजनी।

हंसिके जब तुहूं बोलेलू बतिआवेलू
नीक लागेला अंगना - दुआर सजनी।

सुख - दुख में सम्हारेलू हमरा के तू
बाटे अनमोल नेहिया तोहार सजनी।

टूटी कबहूं सनेहिया के डोरी ना ई
भलहीं छूटी सकल संसार सजनी।

साथ अंतिम समय लें सलामत रहे
इहे बिधना से बिनती हमार सजनी।

रोज 'जूही' पर 'गुंजन' लुभाइल रहे
रहे बगिया में हरदम बहार सजनी।

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

कइसन न जाने हो गइल बेकल इ मन के हाल बा
भटकत कहाँ बानी इहें खुद से हमार सवाल बा

साथे सिवा खुद के सफर में जब नऽ कुछ पाले रहें
तब का कहाँ अइनी गवां भीतर कथी के इ मलाल बा

नइखे दरद कवनो जताके भलहि कट जाई उमिर
बाकिर जवन दिल आह में बा ओहपर का ख्याल बा

कइसे भला एहिंगऽ लगा केहू प हम इल्जाम दी
बानी फसल अपने वफा में खुद कऽ फेकल जाल बा

- सोनू किशोर

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, अंक : 05, अक्टूबर – नवंबर 2023

तेरी मोहब्बत में हम गिरफ्तार हो गए,
नींद पुरी ना हुई ख्वाब सब बीमार हो गए,

तुमने छोड़ी ऐसी तनहाई में साथ मेरा,
ज़िंदगी के सारे सपने भी जीमेवार हो गए,,,

- अलबेला

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

ग़ज़ल

लोग मिलते ही है छोड़ कर चले जानें के लिए
शुक्रिया इस दुनिया से वाकीफ कराने के लिए

इतना आसान नहीं है किसी से कुछ कहना,
लोग हाल भी पुछते है मज़ाक उड़ाने के लिए

एक महबूब यारों बस्ती और वो पीपल का छांव,
हम बहुत कुछ गंवा आए कुछ कमाने के लिए

वैसे तो हम भी शहज़ादे है पर अपने माँ के लिए,
किराए का कमरा सजाते है घर चलाने के लिए

ये तेरी शहर ये इमारते बहुत अच्छी है मगर,
मुझे अपने गांव जाना है छठ मनाने के लिए

- अनीश कुमार 'देव'

मैं हार जाऊंगा...

बस मंजिल मिले,
या रुसवाई मुझे,
अब और न दौड़ लगाऊँगा,
मैं हार जाऊंगा।

सकल सृष्टि है भ्रातृत्व
से परे अब झूल रहा,
मैं कैसे ठौर लगाऊँगा,
मैं हार जाऊंगा।

किरिट मुकुट पे जो दिख रहा,
स्वर्ण वो पुराना है,
मैं नए दौर का इंतज़ार
अब और ना कर पाऊँगा,
मैं हार जाऊंगा।

मुझे रब से दुआ है करना,
इसे सृष्टि का कर विनास तू,
वरना दे भ्रातृत्व का एहसास तु,
मैं तुझसे लड़ न पाऊँगा,
मैं हार जाऊंगा।

- प्रेम शंकर

ग़ज़ल

किसी के दर से जब कोई जाए।
चाहता हूं खुशी खुशी जाए।

अबकी सोऊं तो फिर न जागूं मैं,
नींद पलकों पे यूं रखी जाए।

बात दिल तक पहुंच ही जाती है,
बात दिल से अगर कही जाए।

दोस्त मैं गम तेरा संभालूंगा,
अब जो जाए मेरी खुशी जाए।

जान जाने से कब डरा हूं मैं,
जान जाती है तो चली जाए।

- प्रखार पुंज

महाभारत का अंतिम दृश्य

महाभारत का अंतिम दृश्य
भूपटल पर घोर उदासी लाई थी
हृदय की व्यथा ,अश्रु बन हृदय में ही समाई थी
कहीं थे शस्त्र, कहीं थे अस्त्र,
कहीं वीरों के लहू से धरा नहाई थी
तृप्त हुआ था पशु- पक्षीयों का झुण्ड
खुशी का स्वर आसमां में छायी थी

महाभारत का अंतिम दृश्य
भूपटल पर घोर उदासी लाई थी
वही कहीं दिशाओं में हृदय विदारक कर्राह आई थी
वो तो भीष्म पितामह थे
बाणों की शैय्या पे सूर्य उत्तरायण की आस लगायी थी
उठ रहे मन में प्रश्नों का बवंडर भी शोर मचाई थी
छल से हुआ मैं छलनी, छलिया ने छल करायी थी

महाभारत का अंतिम दृश्य
भूपटल पर घोर उदासी लाई थी
मैं गंगा पुत्र पितामह,
एक नारी पे अस्त्र न उठा पाई थी
शीखण्डी की ओट से, अर्जुन ने बाण चलाई थी

कृष्ण ने तब दर्शन दिए,
मन में उठ रहे प्रश्नों का एक-एक चिन्तन करायी थी
धर्म से छल ,अधर्म पे विजय
हे! पितामह
मैं केशव वसुधा पर धर्म की नींव चाही थी
हाँ, मैं धर्म की नींव चाही थी
महाभारत का महासंग्राम
अधर्म पे धर्म की विजय करायी थी

- रानी कुमारी

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : अभिनंदन पाण्डेय, अलबेला, चित्रांश श्रीवास्तव, कुलदीप तिवारी | संपादक मंडल : विक्की, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजें : rachnakosh.editor@gmail.com